आरोहण की व्यवस्था

शतावरी एक लता है, अत: इसके सही विकास के लिए आवश्यक है कि इसके लिए उपयुक्त आरोहरण की व्यवस्था की जाए । इस कार्य हेतु मचान जैसी व्यवस्था भी की जा सकती है, परन्तु यह ज्यादा उपयुक्त रहता है, कि प्रत्येक पौधे के पास लकड़ी के सूखे डंठल अथवा बांस के डंडे गाड़ दिए जाऐं ताकि लताएं उन पर चढ़कर सही विस्तार पा सके ।

खरपतवार नियंत्रण तथा निराई-गुड़ाई की आवश्यकता

शतावरी के पौधे को खरपतवार से मुक्त रखना आवश्यक होता है, इसके लिए यह उपयुक्त होता है कि आवश्यकता पड़ने पर नियमित अंतराल पर हाथ से निराई-गुड़ाई की जाए, इससे एक तरफ जहां खरपतवार पर नियंत्रण होता है, वहीं हाथ से निराई-गुड़ाई करने से मिट्टी भी नर्म बनी रहती है जिससे पौधों की जड़ों के प्रसार के लिए उपयुक्त वातावरण भी प्राप्त होता है ।

सिंचाई की व्यवस्था

शतावरी के पौधों को ज्यादा सिंचाई की आवश्यक्ता नहीं होती है । यदि माह में एक बार सिंचाई की व्यवस्था हो सके, तो टयूबर्स (जड़ों) का अच्छा विकास हो जाता है । सिचांई फ्लड पध्दति से भी की जा सकती है तथा इसके लिए ड्रिप इरिगेशन पध्दति का भी उपयोग किया जा सकता है, जिसमें अपेक्षाकृत कम पानी की आवश्यकता होती है । सिंचाई करते समय यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि पानी का जमाव ज्यादा देर तक न हो । वैसे शतावर की खेती कम पानी में अथवा बिना सिंचाई के अर्थात असिंचित फसल के रुप में भी की जा सकती है, यद्यपि ऐसी स्थिति में उत्पादन का प्रभावित होना स्वाभाविक है ।

फसल की परिपक्वता

प्राय: लगाने के 18-20 माह के उपरान्त शतावर की जड़े खोदने के योग्य हो जाती हैं ।

जड़ों की खुदाई व उपज की प्राप्ती

खुदाई का उपयुक्त समय अप्रैल-मई माह का होता है । जब पौधे पर लगे हुए बीज पक जाए । ऐसी स्थिति में कुदालीं की सहायता से सावधानीपूर्वक जड़ों को खोद लिया जाता है । खुदाई से पहले यदि खेत में हल्की सिंचाई देकर मिट्टी को थोड़ा मुलायम बना लिया जाऐ तो फसल उखाड़ना आसान हो जाता है । जड़ों को उखाड़ने के उपरांत उनके ऊपर पाये जाने वाला छिलका जहरीला होता है, अत: इसे टयूबर्स से अलग करना आवश्यक होता है ।

छिलका उतारने का कार्य ट्यूबर्स उखाड़ने के तत्काल बाद कर लिया जाना चाहिए, अन्यथा टयूबर्स के थोड़ा सूख जाने पर छिलका उतारना मुश्किल हो जाता है ऐसी स्थिति में इन्हें गुनगुने पानी में थोड़ी देर तक रखना पड़ता है तथा तदुपरान्त ठंडे पानी में थोड़ी देर रखने के उपरान्त ही इन्हें छीलना संभव हो पाता है, छीलने के उपरांत इन्हें छाया में सुखा लिया जाता है तथा पूर्णतया सूख जाने के उपरान्त वायुरुध्द बोरियों में पैक करके बिक्री हेतु प्रस्तुत कर दिया जाता है ।

उत्पादन

प्राय: 20 माह की शतावर की फसल से प्रति हैक्टेयर लगभग 3-4 टन सूखी जड़ प्राप्त होती हैं एवं लगभग 25-30 कि.ग्रा. बीज भी प्राप्त होते हैं ।

ई-चरक ऐप

- जड़ी बूटियों, सुगंधित औषधियाँ, कच्चे माल एवं इनसे संबंधित जानकारी के लिये ई-चरक (ई-मंच) का उपयोग करें ।
- यह ऐप एंड्रॉइड मोबाइल, प्ले स्टोर एवं गूगल पर भी उपलब्ध है ।

क्षेत्रीय सह सुविधा केन्द्र (मध्यक्षेत्र)
राष्ट्रीय औषधी पादप बोर्ड, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली
पौध कार्यिकी विभाग, कृषि महाविद्यालय, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, अधारताल, जबलपुर (म.प्र.)
संपर्क : 0761-2681200, 97793012385, 8482988599, 9301338726
ई-मेल : rcfccentraljnkvv@gmail.com वेब : https://www.rcfccentral.org

शतावरी

(*Asparagus racemosus* Willd L.)

क्षेत्रीय सह सुविधा केन्द्र (मध्यक्षेत्र)
राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड
आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक, यूनानी, सिध्दा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय, भारत सरकार

शतावरी

(*Asparagus racemosus* Willd L.)

कुल	:	एस्परगेसी (Asparagaceae)
हिन्दी नाम	:	शतावर / शतवारी
अंगेजी एवं व्यापारिका नाम	:	शतावरी
आयुर्वेदिक नाम	:	सतावर
उपयोगी भाग	:	कंदिल जड़ें

शतावरी एक कंदिल जड़ युक्त झाड़ीदार पौधा है जिसका उपयोग प्राचीन समय से ही पारम्परिक औषधीय के रुप में किया जाता रहा है । यह पौधा उपसमशीतोष्ण और उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में विशेषकर मध्यभारत में पाया जाता है । यह प्रजाति उपोष्ण कटिबंधीय हिमालय क्षेत्र में 1500 मी. तक ऊँचाई वाले क्षेत्रों में भी पाई जाती है शतावर की झाड़ी 3 से 5 फीट लंबी होती है, जो कांटे युक्त झाड़ीनुमा आरोही लता के समान बढ़ती है । इसलिये पौधे को सहारे की आवश्यक्ता होती है । इसके पुष्प सफेद सुगंधित बारीक, लगभग 3 मि.मी. लंबे होते हैं । इसके फल मटर के दाने के आकार वाले गुठली के रुप में होते है, जो पकने पर लाल हो जाते हैं । इसके बीज काले तथा मांसल जड़े लंबी गुच्छों में होती है ।

औषधीय उपयोग

शतावरी की कंदिल जड़े मधुर और रसयुक्त होती है । इसे बुध्दिवर्धक, शुक्रवर्धक, बलवर्धक, कामोदीपक, मूत्रावरोधक तथा मानसिक रोगों, अतिसार एवं वात, पित्त के विकार दूर करने के रुप में उपयोग किया जाता है ।

जलवायु एवं मृदा

इसकी खेती के लिए उष्ण, समशीतोष्ण एवं शीतोष्ण नम जलवायु सर्वोत्तम होती है । इसकी खेती के लिए बालुई, बालुई दोमट, लाल मिट्टी जिसमें जल निकास की उचित व्यवस्था हो, उपयुक्त होती है ।

प्रवर्धन सामग्री

बीज एवं शिखर कंदर (Crown rhizome) दोनों ही कृषिकरण हेतु प्रयुक्त होते हैं । परंतु बीज की बुवाई करना बेहतर होता है, परिपक्व बीजों को मार्च से मई माह तक एकत्र किया जा सकता है

कद

फल

बीज

कृषि तकनीक

रोपण तकनीक

शतावरी की व्यावसायिक खेती करने के लिए सर्वप्रथम इसके बीजों से इसकी पौधशाला अथवा नर्सरी तैयार की जाती है । यदि एक हैक्टेयर के क्षेत्र में खेती करना हो तो लगभग 25 वर्ग मीटर की एक पौधशाला बनाई जाती है जिसे खाद आदि डालकर अच्छी प्रकार से तैयार कर लिया जाता है इस पौधशाला की ऊँचाई सामान्य खेत से लगभग 25 से 30 से.मी. होनी चाहिए ताकि बाद में पौधों को उखाड़ कर आसानी से स्थानांतरित किया जा सके । मई के मध्य में इस पौधशाला में शतावर के 7 से 12.5 कि.ग्रा. बीज प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़क दिए जाते हैं । बीज छिड़कने के उपरांत इन पर गोबर मिश्रित मिट्टी की हल्की परत चढ़ा दी जाती है, ताकि बीज ठीक से ढंक जाएं, तदुपरांत पौधशाला की फब्बारे अथवा स्प्रिंकलर्स से हल्की सिंचाई कर दी जाती है । प्राय: 10 से 15 दिनों में बीज का अंकुरण प्रारंभ हो जाता है । बीजों से अंकुरण लगभग 40 प्रतिशत तक रहता है, जब ये पौधे लगभग 40-45 दिनों के हो जाएं तो इन्हें मुख्य खेत में प्रतिरोपित कर दिया जाना चाहिए । नर्सरी अथवा पौधशाला में बीज बोने की जगह इन बीजों को पॉलीथीन की थैलियों में भरकर भी तैयार किया जा सकता है ।

खेत की तैयारी

शतावर की खेती 24 से 40 माह की फसल के रुप में की जाती है । इसलिए यह आवश्यक होता है कि प्रारंभ में खेत की अच्छी प्रकार से तैयारी की जाए । इसके लिए मई-जून में खेत को गहरी जुताई करके उसमें 5 टन केंचुआ खाद अथवा 10 टन कम्पोस्ट खाद प्रति हैक्टेयर की दर से खेत में मिला दी जानी चाहिए, जड़ों के अच्छे विकास के लिए यह वांछित होता है कि खेत की जुताई करते तथा खाद मिला देने के उपरांत खेत में मेड़ बना दी जानी चाहिए । इसके लिए 60-60 से.मी. की दूरी पर 25 से.मी. ऊँची मेड़ बना दी जाती है ।

पौधे की रोपाई

जब नर्सरी में पौधे 40-50 दिन की हो जाती है तथा 10-12 से.मी. की ऊँचाई प्राप्त कर लेती हैं तो इसे मेड़ों पर 40-60 सें.मी. की दूरी पर 10-12 सें.मी. गहरे गड्डे खोदकर रोपित कर दिया जाता है । खेत में खाद मिलाने का क्रम खेत की तैयारी के समय भी किया जा सकता है तथा गढ़ढों में पौध की रोपाई के समय भी । पहले वर्ष के उपरांत आगामी वर्ष से प्रतिवर्ष माह जून-जुलाई में 2 टन केंचुआ खाद अथवा 4 टन कम्पोस्ट खाद प्रति हेक्टेयर डालना उपयोगी रहता है ।

पौधा रोपण

सतावर की सूखी जड़